मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 2

nbt.india
एकः सूते सकलम्

फरवरी 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

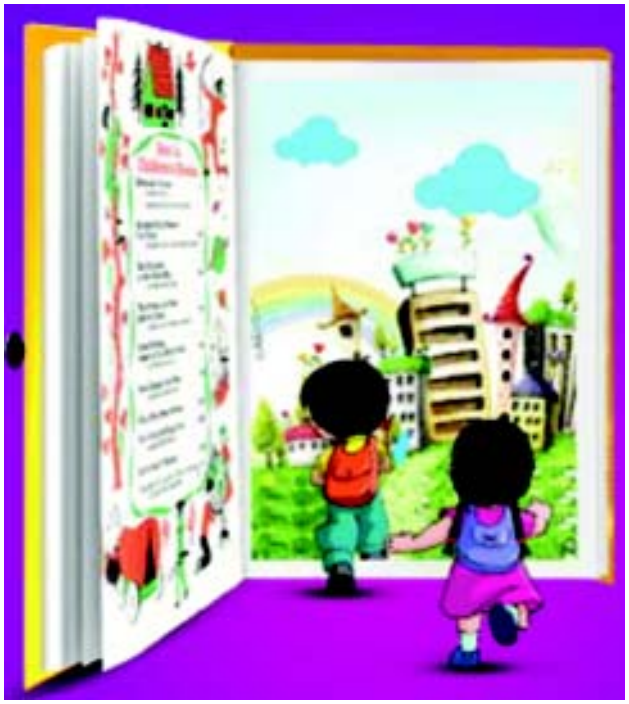

कहानी...कहानियों की–भारत में बाल साहित्य	2
करनाल में शिक्षा शिविर	2
पोलैंड–सम्मानित अतिथि देश	2
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास हैदराबाद पुस्तक मेला	3
रा.पु. न्यास चेन्नै पुस्तक विक्रय केंद्र का उद्घाटन	3
बस्तर पर केंद्रित दो पुस्तकों का लोकार्पण व काव्य संध्या	4
जनजातीय बोलियों में बाल साहित्य अनुवाद कार्यशाला	4
पुस्तक परिचय	6
भोपाल : 19 नवसाक्षर पुस्तकें लोकार्पित	7
पुरी में चौथा हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला	7
चिट्ठीघर	8
रा.पु. न्यास के मुख्य संपादक को सम्मान	8

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
आपके साथ रहना चाहती हैं
अगर किताबें बंद रहेंगी
कैसे अपनी बात कहेंगी!

नवीनतम प्रकाशन

माता सुंदरी जी
महिंदर कौर गिल; अनु. : सुभाष नीरव
पृ. 148 ₹ 95
ISBN 978-81-237-6976-9

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014

कथासागर : बाल साहित्य का महोत्सव

किताबें झाँकती हैं, हर ऊँचाई को नापती हैं।

विश्व पुस्तक मेले के इस 22वें संस्करण का थीम बाल साहित्य पर केंद्रित है। भारत कहानियों, कथावाचकों और कथावाचन की परंपराओं का देश है। महाकाव्य और लोक परंपराओं से निकली नीति कथाओं एवं किंवदंतियों के समृद्ध खजाने ने केवल भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर पीढ़ियों को सुसंपन्न बनाया और मनोरंजन प्रदान किया है। भारत में बाल साहित्य का जन्म इसके बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक लोकाचार से हुआ है जो विषयों की विविधता से परिपूर्ण है। यह साहित्य समकालीन चुनौतियों के साथ आए अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम है। भारत के कुछ ख्यातिनाम लेखकों ने अपनी रचनाओं से बाल साहित्य की विधा को नए विषयों से समृद्ध कर नई पीढ़ी के बाल लेखकों के लिए रास्ता तैयार किया है। आज के युवा और आधुनिक प्रकाशकों के साथ-साथ युवा लेखकों ने भी भारतीय बाल साहित्य प्रकाशन परिदृश्य में नए विषय-विधान और शैलियों का प्रयोग कर इसे बेहद रोचक और वैविध्यपूर्ण बना दिया है। और यही कारण है कि अब भारतीय बाल साहित्य प्रकाशन भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। यही नहीं, आधुनिक संसाधनों के कारण कथावाचन परंपरा की बदल रही परिस्थितियों में कथा कहने और पढ़ने के साधन भी बदलते जा रहे हैं, परंतु आज भी ये कहानियाँ हमारे दिलों को छू जाती हैं।

नई दिल्ल विश्व पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत अपने थीम कार्यक्रम, **कथासागर : बाल साहित्य का महोत्सव** में बाल साहित्य की समृद्ध और वैविध्यपूर्ण विरासत को प्रस्तुत कर रहा है। इस प्रस्तुति में हिंदी व अँग्रेजी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में बाल पुस्तकों के विशेष प्रदर्शन के साथ ही कार्यशालाओं और चर्चा-विमर्श के भी आयोजन शामिल हैं। इसके लिए विशेष रूप से निर्मित पैनल हमें भारत में बाल साहित्य के विकास का प्रत्यक्ष अवलोकन कराएँगे। मनोरंजनात्मक एवं सूचनात्मक यह थीम कार्यक्रम भारतीय बाल साहित्य की समृद्ध, जटिल एवं जीवंत परंपरा की एक शानदार झलक प्रस्तुत करेगा।

किताबें गाती हैं, गुनगुनाती हैं
हमारी ओर आशाभरी नजरों से तकती हैं
चलो किताबों से बतियाने
कि किताबें हमें बुलाती हैं!

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
15 से 23 फरवरी, 2014
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
सम्मानित अतिथि देश : पोलैंड
www.newdelhiworldbookfair.gov.in

कहानी...कहानियों की–भारत में बाल साहित्य

आरंभ में कहानियाँ और केवल कहानियाँ ही थीं। कहानियाँ जिन्हें कला, संगीत एवं नृत्य के माध्यम से सुनाया जाता था। कहानियाँ जो समय के साथ-साथ मिथकों, किंवदंतियों व लोककथाओं के रूप में विकसित हुईं। यही कहानियाँ प्राचीन भारत के श्रेष्ठ महाकाव्यों व साहित्यिक कृतियों का आधार बनीं। भारत का आधुनिक बाल साहित्य स्वतंत्रता तथा स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरित था।

वर्तमान भारत का बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक बाल साहित्य अत्यंत जीवंत तथा समसामयिक है।

विशेष रूप से निर्मित 'कहानी...कहानियों की' भारत के विशिष्ट व समृद्ध बाल साहित्य की सजीव यात्रा है।

भारत 2014 में बाल साहित्य चुनिंदा मुद्रित पुस्तकों का एक प्रदर्शन है। यह आपके समक्ष अँग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में बाल-पुस्तकों की विविध एवं व्यापक शृंखला प्रस्तुत करता है।

कुडक जागीर, करनाल में शिक्षा शिविर

13 दिसंबर, 2013 को राजकीय उच्च विद्यालय, कुडक जागीर, जिला-करनाल, हरियाणा में एक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों के बीच पठन जागरूकता के मद्देनजर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित किए जाने वाले ऐसे शिविरों के क्रम में यह आयोजन हुआ था। स्कूल-परिसर में आयोजित इस शिविर में दो स्कूलों के लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया।

पहली एवं दूसरी कक्षा के बच्चों ने सुलेख प्रतियोगिता, कक्षा III से के V के छात्रों ने ड्राइंग प्रतियोगिता एवं कक्षा VI से VIII के छात्रों ने अनुच्छेद लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगियों को कला एवं लेखन सामग्री रा.पु. न्यास द्वारा उपलब्ध कराई गई। कक्षा IX-X के छात्रों ने कविता वाचन में भाग लिया। कक्षा VII-VIII के विद्यार्थियों ने रंगोली बनाई।

जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी श्री उदय प्रताप सिंह, नोडल ऑफिसर (आरटीइ) श्रीमती राकोश राणा, राजकीय उच्च विद्यालय के डीडीओ श्री रिशी पाल, राजकीय उच्च विद्यालय के प्राथमिक प्रमुख श्री सतीश गाबा एवं एनवीएस (समन्वयन), कार्यालय अधीक्षक श्री एस. कुमार इस अवसर पर उपस्थित थे।

वक्ताओं ने अपने संबोधन में पुस्तकों के महत्व पर प्रकाश डाला। संबोधन में मुख्य रूप से यह कहा गया कि बच्चों को अधिक-से-अधिक पुस्तकें पढ़नी चाहिए, क्योंकि शिक्षा चरित्र एवं विचार निर्माण में सहायक होती है। पुस्तकें हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हमारी सभ्यता और संस्कृति को जानने में अच्छी पुस्तकें हमारी सहायता करती हैं। वक्ताओं ने रा.पु. न्यास के पुस्तकोन्नयन के प्रयासों की भी प्रशंसा की।

कार्यक्रम का समन्वय न्यास में सहायक निदेशक (प्रदर्शनी), श्री दीपांकर गुप्ता ने किया। न्यास में सहायक, श्रीमती सुनीता नरोत्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। स्कूल लाइब्रेरी को न्यास से प्रकाशित पुस्तकें भेंट में दी गईं। बच्चों को स्टेशनरी सामग्री के साथ जलपान भी दिया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

पोलैंड–सम्मानित अतिथि देश

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 में पोलैंड सम्मानित अतिथि देश के रूप में उपस्थित हुआ है। हाल के वर्षों में, पोलैंड का भारत के साथ एक विशेष जुड़ाव हुआ है। इतिहास के पन्नों में दर्ज है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 20,000 से अधिक पोलिश लोगों को तब के भारतीय नवाबी राज्य नवानगर में शरण दिया गया था। यह शरण महाराजा जाम साहेब दिग्विजय सिंह ने दी थी। इस घटना का ब्योरा सुश्री अनुराधा बनर्जी ने अपनी पुस्तक 'द सेकंड होमलैंड' में दिया है।

पोलैंड की अपनी एक जीवंत संस्कृति एवं समृद्ध कलात्मक परंपरा रही है। विशेष रूप से पश्चिमी क्लासिकल संगीत के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के सर्वाधिक विख्यात संगीत रचनाकारों में हैं फ्रेडरिक चोपीन। इस बेहद प्रतिभासंपन्न संगीतकार का संगीत भौगोलिक सीमाओं और संस्कृतियों से परे, सारी दुनिया तक पहुँचा है। भारतीय पाठकों को इस किंवदंतीस्वरूप व्यक्तित्व के परिचय हेतु राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने हाल ही में उन पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया है।

इस पुस्तक मेले में हम 20वीं सदी के पोलैंड के कुछ उत्कृष्ट लेखन को देख पाएँगे। तीन नोबेल विजेता–हेनरी सिन्कीविट्ज, जेस्लाव मिलोज और विस्लावा शिंबोर्स्का समेत अनेक अन्य महान लेखकों ने न केवल पोलिश साहित्य, वरन विश्व साहित्य को समृद्ध किया है। पोलैंड के उत्कृष्ट साहित्य के अलावा वहाँ के प्रख्यात लेखकों, चित्रकारों, आलोचकों, विद्वानों और कुछ प्रमुख प्रकाशकों की उपस्थिति भी पुस्तक मेले को पोलैंडमय बनाने में अपना योगदान करेगा।

पोलैंड के इस वृहत प्रतिनिधिमंडल में शामिल होंगे : जोआन्ना बटोर, लेखक, पत्रकार एवं स्तंभकार; जसेक डेलेन, कवि, उपन्यासकार, चित्रकार एवं अनुवादक; वोजेक जगील्स्की, लेखक; माइकल रुसिनेक, बाल साहित्यकार एवं अनुवादक; ओल्गा टोकारजुक, उपन्यासकार एवं कथाकार; मैलगोर्जाटा गुरोवस्का, कलाकार एवं ग्राफिक डिजाइनर, बाल साहित्य चित्रकार; मैगडेलेना हेडेल, अनुवादक, व्याख्याता एवं लेखक; माइकल नोगास, रेडियो पत्रकार; बीटा स्टासिंस्का, डब्ल्यूएबी पब्लिशिंग हाउस के अध्यक्ष एवं मैगडेलेना इवा हजदुक-देबोस्का, पोलिश राइट्स एजेंसी। पोलैंड की प्रस्तुतियों में शामिल होंगे–पोलैंड के सुपरिचित एवं समकालीन लेखन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विमर्श एवं पठन। आगंतुक समकालीन पोलैंड की एक झलक भी पुस्तक मेले में देख सकेंगे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास हैदराबाद पुस्तक मेला

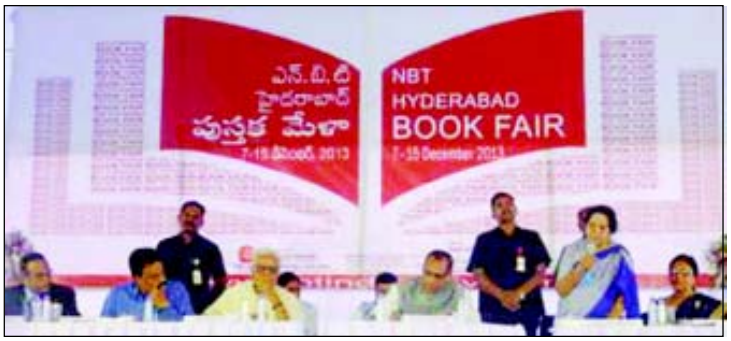

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने हैदराबाद बुक फेअर सोसायटी के सहयोग से 7 से 15 दिसंबर, 2013 के दौरान एनटीआर स्टेडियम, निकट इंदिरा पार्क, हैदराबाद में हैदराबाद पुस्तक मेला का आयोजन किया। पुस्तक मेला का उद्घाटन आंध्र प्रदेश के राज्यपाल, माननीय श्री इ.एस.एल. नरसिम्हन ने किया। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे–प्रो. वकुलावरनम रामकृष्ण, इतिहासकार एवं न्यास के तेलुगु सलाहकार समिति के सदस्य; श्रीमती जीलानी बानो, उर्दू की लेखिका तथा श्री के. श्रीनिवास, कवि एवं संपादक, आंध्र ज्योति।

अपने उद्घाटन संबोधन में राज्यपाल महोदय ने पुस्तकों की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा, ''किसी समाज में नैतिकता के प्रसार एवं सामाजिक बदलाव में उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों का बड़ा महत्व है।'' समाज में बढ़ते बर्बर अपराधों की ओर इंगित अपने संबोधन में उन्होंने उपस्थित लोगों से पूछा कि ''ये समाज नकारात्मक दिशा में क्यों जा रहा है और इतना असहनशील क्यों है?'' आगे उन्होंने कहा, ''लोगों के बीच नैतिकता की पुनर्स्थापना आज के समय की माँग है।''

राज्यपाल महोदय ने पठन आदत के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि स्कूल से ही बच्चों में इस आदत की शुरुआत हो जानी चाहिए। ''टेलीविजन का लोगों पर गहरा प्रभाव होता है, इस कारण पठन की आदत को धक्का लगा है। यदि चैनल अपने कार्यक्रमों को विश्लेषणात्मक बनाएँगे तभी लोग पठन की ओर अधिक-से-अधिक मुड़ेंगे।'' उन्होंने कहा।

प्रो. वी. रामकृष्ण ने पिछले 50 वर्षों में एनबीटी के द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तार से कहा। उन्होंने हैदराबाद में पुस्तक मेला लगाने की भी प्रशंसा की। उन्होंने इसे वार्षिक आयोजन बनाने का सुझाव दिया। श्रीमती जीलानी बानो और श्री के. श्रीनिवास ने हैदराबाद की संस्कृति, साहित्य और तहजीब के बारे में बातें कीं।

रा.पु. न्यास के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने स्वागत-संबोधन में घोषणा की कि न्यास ने हैदराबाद में एक पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र खोलने हेतु आंध्र महिला सभा के साथ एक समझौता ज्ञापन किया है।

हैदराबाद बुक फेस्टिवल सोसायटी की सचिव श्रीमती विभा भारती भी उद्घाटन-सत्र में शामिल हुईं। नवोदय विद्यालय के सौ के करीब बच्चे अपने क्षेत्रीय निदेशक एवं शिक्षकों के साथ आए थे। स्कूल-पूर्व के बच्चों ने फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लिया।

न्यास में तेलुगु भाषा संपादक डॉ. पथिपका मोहन इस पुस्तक मेला के समन्वयक-सह-प्रभारी थे। डॉ. मोहन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन-सत्र समाप्त हुआ।

हैदराबाद पुस्तक मेला न्यास का एक बड़ा आयोजन है। इस मेले में 360 स्टॉल एवं 19 स्टैंड लगाए गए थे। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया द्वारा भी प्रदर्शनी लगाई गई थी।

पुस्तक मेला के दौरान अनेक साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 12 दिसंबर, 2013 को आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के सहयोग से काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। उसी दिन न्यास की नेहरू बाल पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। 14 दिसंबर को प्रख्यात तेलुगु कवियों का काव्य पाठ आयोजित हुआ।

न्यास के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र की गतिविधियों के एक भाग के रूप में 12 दिसंबर को 'स्टोरी टेलिंग मैराथन' का आयोजन हुआ। इसमें 60 बच्चों ने भाग लिया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त श्रीमती डी. सुजाता देवी ने इस कार्यक्रम का न्यास के लिए आयोजन किया। अगले दिन, स्कूली बच्चों के लिए एक चित्रांकन एवं लेखक कार्यशाला का आयोजन हुआ। श्रीमती स्वाति श्रीपदा एवं श्री कोल्लोजु स्रोत व्यक्ति के रूप में उपस्थित हुए।

14 दिसंबर को 'भारतीय भाषाओं में बाल लेखन : समस्याएँ एवं संभावनाएँ' विषय पर आयोजित पैनल सत्र में 22 बच्चों ने भाग लिया। ये बच्चे हैदराबाद, नलगोंडा, कापरा आदि जगहों से आए थे। 15 दिसंबर को स्थानीय स्कूली बच्चों के लिए निबंध, पेंटिंग प्रतियोगिता के अलावा पुस्तक-आधारित क्विज, पहेलियाँ आदि का आयोजन किया गया। विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। पुरस्कारस्वरूप न्यास की पुस्तकें दी गईं, साथ ही प्रमाणपत्र भी दिए गए।

एमेस्को पब्लिशिंग हाउस ने तेलुगु भाषा, साहित्य को पेंटिंग के जरिए प्रदर्शित करती एक विशिष्ट प्रदर्शनी लगाई थी।

8 दिसंबर से मेला परिसर में प्रतिदिन साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन किए जाते रहे। इस तरह के लगभग 38 कार्यक्रम आयोजित हुए।

पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी) के प्रकाशन प्रमुखता से प्रदर्शित किए गए थे। इसके अलावा, साहित्य अकादेमी, तेलुगु अकादमी, द्रविड़ियन यूनिवर्सिटी, प्रकाशन विभाग सहित 270 प्रकाशकों ने तेलुगु, हिंदी, उर्दू एवं अँग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकें प्रदर्शित कीं।

रा.पु. न्यास चेन्नै पुस्तक विक्रय केंद्र का उद्घाटन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास चेन्नै पुस्तक विक्रय केंद्र का अन्ना इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के मुख्य सचिव एवं निदेशक डॉ. वी. इरई अन्बु, आइएएस, ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री सी.एन. महेश्वरन, तमिलनाडु टेक्स्टबुक सोसायटी के अध्यक्ष; श्री ए. सेतुमाधवन, रा.पु. न्यास के अध्यक्ष एवं श्री एम.ए. सिकंदर, रा.पु. न्यास के निदेशक, की गरिमामयी उपस्थिति रही। चेन्नै पुस्तक विक्रय केंद्र देश के विभिन्न राज्यों की राजधानियों में रा.पु. न्यास पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र के खोलने के न्यास के प्रयासों का एक भाग है। इस तरह के अन्य केंद्र शीघ्र ही अगरतला, हैदराबाद एवं गुवाहाटी में खुलने जा रहे हैं।

बस्तर पर केंद्रित दो पुस्तकों का लोकार्पण व काव्य संध्या

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) तथा छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य परिषद की जिला ईकाई के संयुक्त तत्वावधान में 16 जनवरी, 2014 को कोंडागाँव, म.प्र. में बस्तर पर केंद्रित दो महत्वपूर्ण पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। इनमें से एक पुस्तक थी– राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित 'बस्तर का आदिवासी तथा लोक संगीत' (लेखक : हरिहर वैष्णव) और छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य परिषद द्वारा प्रकाशित काव्य संग्रह 'मैं बस्तर बोल रहा हूँ' (डॉ. राजाराम त्रिपाठी)। इस आयोजन की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष चितरंजन रावल ने की। मुख्य अतिथि थे हेमचंद सिंह राठौर। इस अवसर पर लोक संगीत के साथ-साथ काव्य संध्या का आयोजन भी हुआ।

'बस्तर का आदिवासी तथा लोक संगीत' के लेखक श्री हरिहर वैष्णव ने बताया कि यह पुस्तक कोई ढाई सौ लोगों के सहयोग से चालीस साल तक चले शोध व अन्वेषण का सार है, जिसमें 237 बस्तरी, हल्बी आदि बोलियों में पारंपरिक गीत हैं। श्री वैष्णव ने इस पुस्तक के लिए श्रीमती सुखदेई जी को सम्मानित भी किया। दूसरी पुस्तक 'मैं बस्तर बोल रहा हूँ' के लेखक डॉ. त्रिपाठी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वे इस बात से आहत हैं कि बस्तर को बदतर बनाया जा रहा है और उनकी रचनाएँ भले ही किसी को कविता के शिल्प में कमजोर लगें, लेकिन यह उनके अंतर्मन की आवाज है कि यहाँ का सुख, शांति, नैसर्गिक सौंदर्य, लोक जीवन लौटाया जाए। उन्होंने कहा कि उनकी कविताओं में बस्तर के जंगल-जमीन की तरह अनगढ़ भाव हैं। श्री त्रिपाठी ने अपनी एक रचना का पाठ करते हुए कहा कि ये रचनाएँ बस्तर के आमजन व युवाओं की आवाज हैं।

अमरकंटक की जनजातीय यूनिवर्सिटी से आए शोध छात्र अजय कुमार सिंह ने 'बस्तर का आदिवासी तथा लोक संगीत' पुस्तक पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह पुस्तक बताती है कि किस तरह बस्तर के हर अवसर–पर्व, संस्कार, ऋतुओं, सुख-दुख सभी पर गीत-संगीत उपलब्ध हैं। यह पुस्तक बस्तर के सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सभी पक्षों को सहेजती है। श्री सिंह का सुझाव था कि यदि इस पुस्तक को ऑडियो सीडी के साथ पेश किया जाता तो आने वाली पीढ़ी के लिए यह बेहतर संदर्भ-ग्रंथ होता।

श्री सुरेन्द्र रावल ने डॉ. राजाराम त्रिपाठी की पुस्तक 'मैं बस्तर बोल रहा हूँ' की कविताओं को कवि की साफगोई, निर्भीकता के स्वर निरूपित करते हुए कहा कि डॉ. त्रिपाठी की रचनाओं में बस्तर के प्रति उनकी संवेदना, दुख-दर्द तो प्रकट होता ही है ये रचनाकर के दार्शनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी उभारती हैं। इस अवसर पर श्री हेमचंद्र सिंह राठौर ने कहा कि यह कोंडागाँव के लिए गर्व की बात है कि यहाँ के रचनाकार राष्ट्रीय स्तर पर यहाँ की कला, संस्कृति, समस्याओं को अपनी कलम के माध्यम से सतत प्रस्तुत कर रहे हैं। श्री चितरंजन रावल ने बीते 50 साल के दौरान हिंदी साहित्य में कोंडागाँव के योगदान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को याद करते हुए कहा कि लोकार्पित दोनों पुस्तकों की भाव-भूमि भले ही अलग-अलग हों, लेकिन उनके सरोकार समान हैं।

आयोजन में खीरेन्द्र यादव व साथियों ने हल्बी में 'लेजा' और भतरी में 'डांडा माली' लोकसंगीत प्रस्तुत कर श्रोताओं को थिरकने पर मजबूर कर दिया। आयोजन में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी संपादक पंकज चतुर्वेदी ने उनके संस्थान द्वारा बस्तर क्षेत्र के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए इस बात के लिए कोंडागाँव के लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया कि न्यास के बस्तर में कार्य की शुरुआत यहीं से हुई थी।

जनजातीय बोलियों में बाल साहित्य अनुवाद कार्यशाला

स्थानीय बोली से बढ़ता है आत्मसम्मान और खुलता है विकास का रास्ता–अंकित आनंद

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और जिला प्रशासन, जगदलपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय 'जनजातीय बोलियों में बाल साहित्य के अनुवाद' की कार्यशाला का समापन गत दिवस हुआ। इस कार्यशाला में दोरली, धुरवी और दंडामी गोंडी में चार-चार पुस्तकों का अनुवाद, संपादन, टाइप सेटिंग और सीआरसी बनाने का कार्य संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए कोंटा, सुकमा, दंतेवाड़ा के आंचलिक क्षेत्रों से अनुवादक बुलाए गए थे। इस कार्यशाला के उद्‌घाटन-अवसर पर बस्तर के कलेक्टर श्री अंकित आनंद ने कहा है कि स्थानीय बोली समृद्ध होती है, तो स्थानीय लोगों का आत्मसम्मान बढ़ता है, और बढ़ा हुआ आत्मसम्मान ही विकास का रास्ता भी खोलता है। किसी स्थानीय बोली में साहित्य सृजन और रचना का निर्माण बच्चों के विकास के लिए फायदेमंद होगा। स्थानीय बोली में सृजित नैतिक शिक्षा और साहित्य की सीख बच्चों को बुनियादी तौर पर दिए जाने हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने जो पहल की है, वह सराहनीय है।

श्री अंकित आनंद ने 14 जनवरी को जगदलपुर के स्थानीय नमन बस्तर में दोरली, धुरवी और गोंडी बोली पर केंद्रित तीन दिवसीय अनुवाद-कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक और लोक साहित्य का सृजन अकादमिक स्तर का है। मुझे प्रसन्नता है कि इस कार्यशाला में जुटे लोग अकादमिक क्षेत्र से हैं। उन्होंने कहा कि हमें स्थानीय बोलियों में सृजित किताबों हेतु लक्षित पाठक वर्ग तलाशना होगा। उन्होंने कहा कि स्थानीय बोलियों में मुद्रित और प्रकाशित एनबीटी की इन किताबों को आँगनबाड़ियों और प्री-प्राइमरी की कक्षा में आने वाले बच्चों तक पहुँचाना होगा। इन बोली, भाषाओं के जानकारों और शिक्षाविदों के परीक्षण के बाद ये किताबें लक्षित पाठक वर्ग तक पहुँचाने में ही नहीं, अपितु उसे ग्राह्य करने में भी सफलता मिलनी चाहिए। श्री आनंद ने बस्तर की स्थानीय बोलियों के गीत, संगीत को याद करते हुए कहा कि यह सदियों से यहाँ चला आ रहा है। हरेक अवसर पर अलग-अलग गीत, संगीत बस्तर की स्थानीय बोलियों में गाए और सुने जाते हैं। बस्तर की इन बोलियों में अनेक मौखिक साहित्य है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आ रहा है। इसका सृजन साहित्य के रूप में करते हुए रचना का निर्माण किया जाना बच्चों के लिए फायदेमंद होगा।

श्री अंकित आनंद ने इसी शृंखला में स्थानीय बोली में साहित्य सृजन की संकल्पना को व्यावहारिक निरूपित करते हुए कहा कि किताबों के प्रकाशन के अलावा समुदाय के विकास के लिए दृश्य-श्रव्य माध्यमों, यथा सामुदायिक रेडियो इत्यादि के जरिए भी शैक्षणिक और बौद्धिक स्तर पर विकास किया जा सकता है, और इस दिशा में आने वाले तीन माह में 'रेडियो बस्तर' की संकल्पना को भी मूर्त रूप दिलाने की पहल की जाएगी। उन्होंने कार्यशाला में बस्तर संभाग के सभी जिलों से आए बोली, भाषा के जानकारों को दोरली, धुरवी और गोंडी में साहित्य सृजन किए जाने के लिए अपनी शुभेच्छाएँ भी दीं।

बोलियाँ नष्ट होंगी, तो उससे जुड़ी संस्कृति और लोकाचार में भी संकट आएगा –डॉ. के.के. झा

अनुवाद की इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद शिक्षाविद् डॉ. के.के. झा ने कहा कि बस्तर क्षेत्र की बोलियाँ द्रविड़ और संस्कृत भाषा परिवार से आई हैं। उन्होंने कहा कि अनुवाद का कार्य तो सदियों से चला आ रहा है। भारत में मुगल काल में भी अनुवाद का काफी कार्य हुआ है। धुरवी, मुरिया, भतरी–ये बोलियाँ संस्कृत से गमन करती आई हैं। डॉ. झा ने कहा कि ज्ञान और अभिज्ञान के लिए पढ़ने में रुचि बढ़ाने में अनुवाद की बेहद प्रमुख भूमिका है। उन्होंने कहा कि बोलियाँ नष्ट होंगी तो उससे जुड़ी संस्कृति और लोकाचार भी संकट में आएगा।

डॉ. के.के. झा ने कहा कि कई बार मूल ग्रंथ से अनुवाद ज्यादा अच्छा हो जाता है। वाचिक परंपरा से चलने वाली चीजों से इतिहास बनता है। बस्तर की स्थानीय बोलियों में संस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है। स्थानीय बोली, लोक भाषा में जो साहित्य सृजन हुआ है, उसमें सच्चाई और अनुभव दिखता है।

इस तीन दिवसीय अनुवाद कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद संयुक्त संचालक जनसंपर्क श्री आलोक देव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप स्थानीय बोली, भाषा में साहित्य सृजन हो इस दिशा में एनबीटी का यह प्रयास सार्थक है। उन्होंने खासतौर से बच्चों के लिए सृजित ख्यातिनाम हिंदी और अँग्रेजी की गीत-रचनाओं को बस्तर की स्थानीय बोली और मातृभाषा में सृजित किए जाने की आवश्यकता जताते हुए कहा कि इससे बच्चों में मौलिक रूप से नैतिक शिक्षा का विकास होगा। बच्चे 'मोरल साईंस' से आसानी से भिज्ञ होंगे। उन्होंने कहा कि ऐसे साहित्य सृजन के साथ स्थानीय बोली, भाषा में ही अन्य प्रचार माध्यमों यथा रेडियो, आकाशवाणी और दूरदर्शन सहित विभिन्न चैनलों और क्षेत्रीय चैनलों के जरिए ज्ञानवर्धक और जनचेतनामूलक कार्यक्रमों के प्रसारण का सकारात्मक सुझाव दिया। इस पर कलेक्टर, बस्तर ने 'रेडियो बस्तर' के शीघ्र शुरू किए जाने की जानकारी दी।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी संपादक एवं इस अनुवाद कार्यशाला के मुख्य संयोजक श्री पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि अनुवाद का काम केवल पुस्तक प्रकाशन तक ही सीमित नहीं, बल्कि यह बोलियों के संरक्षण का एक तरीका भी है। श्री चतुर्वेदी ने बताया कि यह बस्तर में आयोजित तीसरी कार्यशाला है। इसके पूर्व, भतरी में 11 पुस्तकें अनूदित और प्रकाशित की जा चुकी हैं। इसके पश्चात हल्बी में भी अनुवाद की कार्यशाला जगदलपुर में सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी और इसकी भी पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

भतरी में सृजित लोक साहित्य का हुआ लोकार्पण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से बस्तर में ही बस्तर के भाषाविदों और लोक साहित्य के जानकारों की जुलाई 2013 में हुई कार्यशाला में भतरी बोली में सृजित की गई 11 पुस्तकों का लोकार्पण 14 जनवरी को किया गया। बस्तर-कलेक्टर श्री अंकित आनंद, शिक्षाविद् और इतिहास के जानकार डॉ. के.के. झा, डॉ. रोहिणी कुमार झा, श्री रुद्रनारायण पाणिग्रही और बस्तर की स्थानीय बोली के जानकारों और शिक्षाविदों की उपस्थिति में इन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। भतरी बोली में सृजित जिन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, उनमें *माहा ठोसोर माहा कसेला, नेवरा बले राजा आय* (अनुवाद : डॉ. रूपेन्द्र कुमार कवि), *फिलफिली आवरी आसार गीत-गोबिन्द* और *सबु संवसारमयार संवसार* (अनुवाद : शम्भूनाथ कश्यप), *नीला आवरी तार जादु बिती पनही* और *मंजुर पाखि* (अनुवाद : तुलसीराम पाणिग्रही), *लुदूर सपना* (अनुवाद : नरेन्द्र पाढ़ी), लमाहा *आवरी कचिमर हारा-जिता* और *लाल पतंग आवरी लयखन* (अनुवाद : रुद्रनारायण पाणिग्रही), *मोर कहनी* और *आमर मयार मंजुर* (अनुवाद : पीताम्बर दास वैष्णव) पुस्तकें लोकर्पित हुईं। इन पुस्तकों के लोकार्पण पर स्थानीय बोली-भाषा के जानकारों ने बेहद प्रसन्नता व्यक्त की।

अब धुरवी, गोंडी और दोरली में लोक साहित्य का सृजन

रा.पु. न्यास द्वारा 14 से 16 जनवरी तक आयोजित तीन दिवसीय अनुवाद कार्यशाला में धुरवी, गोंडी और दोरली लोक साहित्य का सृजन किया गया। जिन ख्यातिनाम पुस्तकों को अनुवाद कार्यशाला के जरिए बस्तर की स्थानीय बोली, भाषा में अनूदित किया गया, उनमें 12 पुस्तकें शामिल हैं। इन 12 पुस्तकों में 4 पुस्तकें धुरवी लोक भाषा में, 4 पुस्तकें गोंडी में और 4 पुस्तकें दोरली में अनूदित की जा रही हैं। इसके अंतर्गत धुरवी लोकभाषा के जानकारों के जरिए *जैसे को तैसा* पुस्तक का दरभा सौतनार के श्री दुरबन कुमार नागद्वारा, *जब आए पहिये* का मारेंगा, तोंगपाल जिला सुकमा के श्री शिवकुमार नाग द्वारा, *जंगल में धारियाँ* पुस्तक का नेगानार, दरभा, जिला बस्तर के श्री बुधराम कश्यप द्वारा, *पानी ही पानी* पुस्तक का बस्तर विश्वविद्यालय मानव विज्ञान जनजाति अध्ययनशाला के श्री शोभाराम नाग द्वारा अनुवाद किया गया। इसी प्रकार, गोंडी लोकभाषा में हिंदी की पुस्तकों *गोरा-काला* और *छोटे पौधे-बड़े पौधे* का राजीव गाँधी शिक्षा मिशन दंतेवाड़ा के एपीसी श्री सिकंदर खान द्वारा, *इंद्रधनुष* पुस्तक का एपीसी राजीव गाँधी शिक्षा मिशन दंतेवाड़ा के श्री बी.आर.कवासी द्वारा, और *पहेली* नामक पुस्तक का गोंडी में ग्राम जारम, पोस्ट मेटापाल, दंतेवाड़ा के श्री जोगाराम कश्यप द्वारा अनुवाद किया गया है। वहीं दोरली भाषा में जिन 4 पुस्तकों का अनुवाद किया गया, उनमें *कितनी प्यारी है यह दुनिया* पुस्तक का माध्यमिक शाला चिंताकोटा, जिला सुकमा के शिक्षक पंचायत श्री कड़म सीताराम द्वारा, *तितली का बचपन* पुस्तक का ग्राम माटेमरका, गच्चनपल्ली जिला सुकमा के श्री स्वयंशंकर द्वारा, *धनेश के बच्चे ने उड़ना सीखा* पुस्तक का कोंटा, जिला सुकमा के श्री मड़कम साहेब द्वारा और *फल और मधुमक्खी* नामक पुस्तक का दोरली में अनुवाद कोंटा जिला सुकमा के श्री कोड़े राकेश द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की इस तीन दिवसीय कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर स्थानीय संयोजकों में श्री रुद्रनारायण पाणिग्रही, भाषा संपादक श्री विक्रमकुमार सोनी, सेवानिवृत्त व्याख्याता श्री शशि पांडे, कांकेर जिले से आए श्री पूर्णचन्द्र रथ और श्री कमल शुक्ला, प्रो. योगेन्द्र मोतीवाला और बस्तर की स्थानीय बोली, भाषा के जानकार सहित मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत एवं **यूनिवर्सल बुक एंपोरियम**
का
विशिष्ट पुस्तक विक्रय केंद्र
यूनिवर्सल बुक एंपोरियम
पी-4675/XI, प्रथम तल, गणपति भवन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

पुस्तक परिचय

मेरे साक्षात्कार (साक्षात्कार)
मृदुला गर्ग; (संयोजन : विज्ञान भूषण); पृ. 152 ₹ 225
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
साक्षात्कार साहित्य की एक सशक्त विधा है। इससे रचनाकार की रचना-प्रक्रिया के साथ-साथ उसके आभ्यंतर को भी जाना जा सकता है। वरिष्ठ लेखिका मृदुला गर्ग के इस साक्षात्कार पुस्तक में 17 साक्षात्कारों को शामिल किया गया है।

खुली छतरी (कहानी संग्रह); *भावना शेखर;* पृ. 120 ₹ 200
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
शीर्षक कहानी समेत कुल 12 कहानियाँ—अलग-अलग कलेवर में, अलग-अलग तेवर में। कथ्य सहज, कहानी के विषय हमारे आस-पास से। स्त्री मुक्ति का बिंदास अंदाज भी, जहाँ बलात्कार को भी महज दुर्घटना मानने का आग्रह है।

त्रिसुगंधि (काव्य संकलन)
संपा. : आशा पाण्डे ओझा; पृ. 296 ₹ 150
बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, रोड नं. 11, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
इस त्रिसुगंधि में नामारूप गीत, ग़ज़ल और कविता की अगरू-महक है। सौ से अधिक रचनाकारों की रचनाओं का संचयन है यह कविता पुस्तक। रचनाकारों में से अधिकांश के नाम अल्पज्ञात हैं, और यही इस संग्रह की विशिष्टता है।

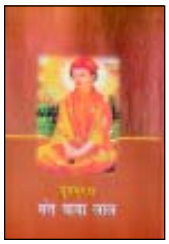

युगपुरुष संत बाबा लाल
डॉ. मीनाक्षी मोहन
पृ. 232 ₹ 375

सूफ़ी संत बाबा फ़रीद
डॉ. उमा शशि दुर्गा
पृ. 144 ₹ 250

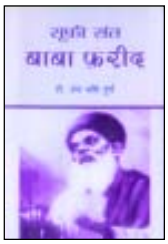

इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल,
18-बी, साउथ अनारकली, दिल्ली-51
ईस्वी सन् 1173 बाबा फरीद का जन्मकाल है जबकि ई. सन् 1355 संत बाबा लाल का। दोनों ही संतों ने अपने-अपने जीवनकाल में अपने समय और समाज को गहरे प्रभावित किया। उनके वचन आज भी प्रासंगिक हैं। इन संतों के जीवन और वाणी का संग्रह ये पुस्तकें।

जो कह ना सकूँ (कहानी संग्रह)
डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी 'प्रीता'; पृ. 122 ₹ 175
प्रीता प्रकाशन, ए-511, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल गार्ड के पास, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर, राजस्थान
कथाकार की 11 कहानियों का संग्रह। 'हमारी ये कहानियाँ उस वक्त का दस्तावेज भी हैं जिन्होंने बाह्य दबावों को अंतस तक छुआ है। यह 'अपने होने' की भी दास्तां बयां करती हैं।...' लेखिका ने इस तरह से अपनी बात इस संग्रह के बारे में रखी है।

छूना है आसमान (उपन्यास)
सुकीर्ति भटनागर; पृ. 86 ₹ 100
उड़ान पब्लिकेशंस, मनसा-151505
बच्चे स्वभाव से निर्मल, निश्छल और सरल होते हैं। उन्हें जैसे मोड़ो, जिस धारा की ओर ले जाओ, उधर ही जाएँगे। बच्चों की इन्हीं चरित्रगत विशेषताओं को विवेच्य बाल उपन्यास के बाल नायक में उकेरा गया है।

खेलगुरु (उपन्यास); *रमेश दवे;* पृ. 320 ₹ 495
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
खेल के अंदर खेल, भावनाओं से खेल। और खेल करने वाले खेलगुरु। खेलगुरु द्वारा खिलाड़ियों की संवेदनाओं से खिलवाड़। इस कथानक में प्रेम भी है और पाखंड भी। खेलों पर अंतरंग टिप्पणी-सा है यह उपन्यास, जिसमें खेल-कोच की गलीज इच्छाएँ पग-पग पर दृष्टिगोचर होती हैं।

लड़की...एक उम्मीद : एक उमंग (कविता संग्रह)
लालित्य ललित; पृ. 148 ₹ 395
यश पब्लिकेशंस, 1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
लड़की, स्त्री जो कह लें, इनके विविध रूपों और आयामों का कवि ने पोस्टमार्टम किया है, बगैर किसी हिचक या लाग-लपेट के। लड़की सड़क पर, दफ्तर में, गाँव में, पहाड़ों में, शादीशुदा, कुँआरी, उम्र के किसी भी मोड़ की लड़की—लड़की के हर रूप को यथार्थ के चश्मे से देखा है कवि ने।

मन रे गा; *डॉ. विष्णु राजगढ़िया;* पृ. 144 ₹ 295
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
मनरेगा यानी महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम। मनरेगा लाखों ग्रामीण बेरोजगारों के जीवन में एक नई ज्योति, एक नई चमक ला रहा है। लेखक ने मनरेगा के विभिन्न पहलुओं का सांगोपांग विवरण इस पुस्तक में दिया है, और खास बात यह कि 'मनरेगा' जैसे एक नीरस शब्द में 'मन रे गा' जैसे सरस शब्द की ध्वनि खोजकर इसे भावपूर्ण व शास्त्रीय बना दिया है।

शब्द सागर (काव्य संकलन)
संपा. : कमलेश व्यास 'कमल'; पृ. 248 ₹ 400
शब्दप्रवाह साहित्य मंच, ए/99, वी. डी. मार्केट, उज्जैन, म.प्र.
बीस ज्ञात, अल्प ज्ञात कवियों की कविताओं का गुलदस्ता। कविता के स्वर अलग, परिवेश अलग, लेकिन सभी कविताओं में सामाजिक विडंबनाओं एवं विसंगतियों को उभारने की ललक है। एक अच्छा प्रयास।

एकलव्य (खंड काव्य)
परमानंद राम; पृ. 88 ₹ 100
संस्कृति प्रकाशन, शांतिसदन, प्रभात नगर, शेखपुर, अखाड़ाघाट, मुजफ्फरपुर, बिहार
एक अकेले आदमी की लड़ाई का औजार का नाम है एकलव्य, जो महलों से दूर जंगल में पलता-पढ़ता है और अकेले दम भ्रष्ट स्थापनाओं की धज्जियाँ उड़ाता है। एकलव्य कहता है : नहीं-नहीं, मैं भी धारा का वेग बदल सकता हूँ, बिन महल की रोशनी, आगे मैं चल सकता हूँ।

रूबाइयाँ-ए-एकता; *चतुर्भुज दास 'चमन';* पृ. 94 ₹ 100
मीनाक्षी प्रकाशन, एम. बी. 32/2 बी, गली नं. 2, शकरपुर, दिल्ली-92
मानवीय मूल्यों का ह्रास आज एक वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। धर्म के नाम पर अधर्म का तांडव हो रहा है। नैतिकता का क्षरण और अनैतिकता का वरण हो रहा है। ऐसे माहौल में प्रस्तुत रूबाइयाँ जन-जन में प्रेम, एकता और सौहार्द का संदेश पहुँचाएँगी।

भोपाल : 19 नवसाक्षर पुस्तकें लोकार्पित

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में राज्य संसाधन केंद्र एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संयुक्त तत्वावधान में पुस्तक लोकार्पण और संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय 'वर्तमान संदर्भ में नवसाक्षर लेखन की संभावनाएँ' रखा गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता भोपाल दूरदर्शन के पूर्व निदेशक व वरिष्ठ साहित्यकार श्री शशांक ने की। मुख्य अतिथि थे वरिष्ठ संपादक, देशबंधु, श्री पलाश सुरजन। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्वान वक्ता श्री शशांक ने कहा–वर्तमान समय सूचना और तकनीकी क्रांति का समय है। शहरी और ग्रामीण गरीब महिला और पुरुष निरक्षरता के बावजूद मोबाइल और अन्य तकनीकी चीजों का बेहतर इस्तेमाल करने लगे हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से उन तक बहुत सारी सूचनाएँ लगातार पहुँच रही हैं। ऐसे में साक्षरता की जरूरत अधिक बढ़ती जा रही है। नवसाक्षर साहित्य लेखन में असीम संभावनाएँ हैं। नवसाक्षरों के लिए सरल, सहज एवं सरस भाषा में साहित्य रचना होगा। श्री पलाश सुरजन ने कहा कि ''निश्चित ही न्यास का यह एक बेहतरीन प्रयास है जिसके अंतर्गत विविध विषयों पर सुंदर पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। हास्य, स्वास्थ्य, नशा, लोक साहित्य, सूचना क्रांति, जीवन चरित, महिला सशक्तीकरण आदि विषयों को आधार बनाया है। श्री पलाश ने आगे भी ऐसी सार्थक कार्यशालाओं के आयोजन पर बल देते हुए कहा कि इस तरह के प्रयासों से राज्य के रचनाकारों को मुख्य धारा से जुड़ने का मौका मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि वे खुद राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के बचपन से ही गहरे पाठक रहे हैं।

न्यास के संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने कार्यशाला से संबधित कुछ यादों को ताजा करते हुए कहा–हमारी पूरी कोशिश रहती है कि हम विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन करें। इसके लिए रचनाकारों का चुनाव और ग्रामीण इलाकों में जाकर नवसाक्षरों के बीच में कहानी का पाठ शामिल है। वास्तव में सरल लिखना जितना कठिन है, कठिन लिखना उतना ही सरल है।

कार्यशाला में शामिल मध्य प्रदेश के कुछ रचनाकारों ने भी अपनी बात साझा की जिसमें रतलाम के आशीष दशोत्तर, इंदौर से सीमा व्यास, भोपाल से राजुरकर राज शामिल थे। इस अवसर पर श्री खरे ने व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय की *मोबाइल देवता* और आलोक श्रीवास्तव ने फारूख आफरीदी की पुस्तक *हम सब एक हैं* का पाठ किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यशाला में शामिल व उपस्थित रचनाकारों को नवसाक्षर साहित्य सम्मान से भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर न्यास को साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु सम्मानित किया गया। यह सम्मान न्यास की ओर से हिंदी संपादक ने ग्रहण किया। राज्य संसाधन केंद्र के निदेशक श्री संजय सिंह राठौर ने भी आमंत्रितों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य नवसाक्षरों को उचित पठनीय सामग्री मुहैया करना है जिसमें हमें हमेशा न्यास का सहयोग मिला है। हमारी कोशिश रहेगी कि आने वाले समय में हास्य, कानून पर भी केंद्रित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा जिसमें राज्यों के और भी नए रचनाकारों को शामिल किया जाएगा।

लोकार्पित 19 पुस्तकें इस प्रकार थीं–*फिर मुस्काई नीतू,* सुषमा दुबे; *रोशनी,* अनुराग वाजपेयी; *झिलमिल,* निशात फातिमा; *गाँव का बेटा,* राकेश चक्र; *दीनू से दीनानाथ,* राजेश साहू; *राजा के दो सींग,* ऋषि मोहन श्रीवास्तव; *बकरी का बच्चा,* संदीप श्रीवास्तव; *हम सब एक हैं,* फारूख आफरीदी; *रेवा की वापसी,* सीमा व्यास; *जानकी,* संजय सिंह राठौर; *कांकेर के गांधी : इन्दर केवट,* परदेशी राम वर्मा; *सुबह का इंतजार,* पंकज भार्गव; *मत रो सुखिया,* राकेश पाण्डेय; *सुमन की जीत,* राजुरकर राज; *भूत आदमी,* लियाकत खोकर साहिल; *बालक की सीख,* सुदर्शन वशिष्ठ; *गुटखाराम,* गिरीश पंकज; *मोबाइल देवता,* प्रेम जनमेजय; *नामवाले चाचा,* आशीष दशोत्तर।

पुरी में चौथा हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला

राजभाषा अकैडमी, दिल्ली द्वारा पुरी (ओडिशा) में 7 से 10 जनवरी, 2014 तक आयोजित किए गए 'चौथे हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला' में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से संपादक व राजभाषा अधिकारी, श्रीमती उमा बंसल व वरिष्ठ आशुलिपिक, श्री सुभाष चंद्र ने भाग लिया। इस सम्मेलन व कार्यशाला में देशभर के विभिन्न सरकारी कार्यालयों से लगभग 65 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत सरकार के राजभाषा संबंधी आदेशों/निर्देशों का अनुपालन करते हुए सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने, कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी तथा हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन की तकनीकी जानकारी देने के उद्देश्य से इस अकैडमी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन व कार्यशाला में पाँच सत्र आयोजित किए गए।

7 जनवरी को अपराह्न में कार्यशाला का पहला सत्र दीप प्रज्वलन व उपस्थित प्रतिनिधियों के स्वागत व परिचय से आरंभ हुआ।

8 जनवरी को दूसरे सत्र में केंद्रीय हिंदी राजभाषा के सेवानिवृत्त निदेशक, श्री प्रेम सिंह ने 'राजभाषा हिंदी के संवैधानिक उपबंध' विषय पर बोलते हुए संविधान में वर्णित विभिन्न महत्वपूर्ण अनुच्छेदों की जानकारी दी तथा 'संघ की राजभाषा नीति' संबंधी बिंदुओं से अवगत कराया। इस सत्र में विशेष रूप से संसदीय राजभाषा समिति की कार्यप्रणाली/प्रश्नावली के साथ-साथ तिमाही रिपोर्ट के बारे में भी जानकारी दी गई। तीसरे सत्र में वहाँ संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय में वरिष्ठ हिंदी सलाहकार, श्री सुभाष चंदर ने 'हिंदी में टिप्पण-मसौदा आलेखन' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

9 जनवरी को चौथे सत्र के दौरान न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के उप-प्रबंधक, श्री भूपेंद्र कुमार ने कंप्यूटर पर उपलब्ध हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयर/यूनीकोड/फोनेटिक की-बोर्ड इत्यादि की जानकारी पॉवर प्वाइंट प्रदर्शन के माध्यम से दी। उन्होंने गैर-यूनीकोड फौंट में टंकित सामग्री को यूनीकोड में परिवर्तित करना भी सिखाया तथा हिंदी शिक्षण, टंकण व अनुवाद से संबंधित जो-जो टूल्स नेट पर उपलब्ध हैं, उनकी जानकारी दी।

कार्यक्रम कें अंतिम चरण 'चर्चा-परिचर्चा' की अध्यक्षता न्यास की संपादक, श्रीमती उमा बंसल ने की। इस सत्र में प्रतिभागियों ने कार्यशाला से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्रीमती बंसल ने न्यास की गतिविधियों/नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की जानकारी के साथ उपस्थित सभी प्रतिभागियों को नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में पधारने का निमंत्रण भी दिया।

शैक्षणिक भ्रमण के अंतर्गत श्री जगन्नाथ जी मंदिर तथा कोणार्क मंदिर का भ्रमण करवाया गया।

राजभाषा अकैडमी के निदेशक श्री अभिषेक शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन व कार्यशाला का समापन हुआ।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/2/2014

चिट्ठीघर

संवाद के द्वारा यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आम लोगों में पुस्तक-पठन रुचि पैदा करने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पुस्तकोन्नयन की अनेक गतिविधियाँ संचालित करता है। बधाई!

जी. आर. के. रेड्डी 'अमरजी', हिंदी प्रचारक, बेंगलुरु, कर्नाटक

संवाद की प्रत्येक माह प्रतीक्षा रहती है। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 के संबंध में पढ़कर प्रसन्नता हुई। पुस्तक एवं पुस्तकोन्नयन से संबंधित गतिविधियों की जानकारी इसी तरह देते रहें। **सुरेश दीवान,** अकोली, रायपुर, छत्तीसगढ़

संवाद में प्रकाशित पुस्तकीय एवं साहित्यिक खबरें जानकारी बढ़ाने वाली होती हैं। हर अंक में अलग-अलग जगहों पर संपन्न पुस्तक मेलों से संबंधित समाचार ज्ञानवर्धक और उपयोगी होते हैं। पुस्तकीय गतिविधियों का यह बेहतरीन पत्र है।

प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

जालंधर पुस्तक मेला, पंजाब

15 से 23 मार्च, 2014

स्थान : देशभगत यादगार हॉल, जालंधर

समय : सुबह 11 से रात्रि 8 बजे तक

विशेष आकर्षण

• प्रतिदिन साहित्यिक कार्यक्रम • 60 से अधिक प्रकाशक

• पंजाबी, हिंदी, उर्दू एवं अँग्रेजी की पुस्तकें

आयोजक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

रा.पु. न्यास के मुख्य संपादक को सम्मान

पंजाबी साहित्य सभा, नई दिल्ली की ओर से 19 जनवरी, 2014 को दिल्ली में एक साहित्यिक समारोह का आयोजन किया गया। इसमें पंजाबी के प्रख्यात छह लेखकों को सम्मानित किया गया। इस साहित्यिक समारोह में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक **डॉ. बलदेव सिंह बद्दन** को पंजाबी भाषा साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति पत्र एवं 50 हजार रुपये प्रदान किए गए। सम्मानित होने वाले अन्य साहित्यकार थे– श्री कुलदीप नय्यर, डॉ. जसवंत सिंह नेकी, डॉ. रवेल सिंह, डॉ. हरवंश सिंह चावला और श्री रणजीत धीर (यूके)। इस समारोह में दिल्ली, पंजाब और हरियाणा के लेखक सम्मिलित हुए।

डॉ. बद्दन का सम्मान करते हुए पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के उप कुलपति डॉ. जसपाल सिंह, डॉ. रेणुका सिंह। साथ में उपस्थित हैं अन्य साहित्यकार

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070